वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 19	Year 2	Volume 7	April 2014 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 2

विचार

onka es b'oj l ikFkuk

हे सकल जगत को बनाने वाले, सब ऐश्वर्यों से युक्त, शुद्व स्वरूप, सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सारे दुर्गण, दुर्वसन अर्थात खराब आदतों व दुखों को दूर कर दीजिये, ताकी जो कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव व पदार्थ हैं, वे हमें प्राप्त हों।

हे प्रभु आप स्वप्रकाश स्वरूप है आपने पृथ्वीलोक, अन्तरिक्षलोक, द्युलोक तथा प्रकाश देने वाले सूर्य आदि को धारण किया हुआ है। आप समस्त ब्रहमाण्ड का एक मात्र स्वामी व पालनकर्ता है। आप सब जगत के उत्पन्न होने से पूर्व भी विद्यमान थे। हम आपको पाने के लिये अति प्रेम से भक्ति कर रहे हैं व करते रहें ताकि हमे सब सुखों की प्राप्ती हो।

हे प्रभु आप आत्मज्ञान, शारीरक, व आत्मिक बल देने वाले है। सब विद्वान व श्रेष्ठ लोग आपकी उपासना करते हैं। आपके सत्य स्वरूप, शासन और न्याय व्यवस्था को मानते हैं। हे प्रभु आपका आश्रय लेना ही सुख है और आपको भूल जाना ही दुख का कारण है। हम आपको पाने के लिये अति प्रेम से भक्ति कर रहे हैं व करते रहें ताकि हमे सब सुखों की प्राप्ती हो।

हेप्रभु ! आप प्राण वाले और प्राणविहीन संसार में जो भी पदार्थ है उन सब को बनाने वाले हैं। अर्थात आप प्राण वाले मनु"य, पशु से लेकर प्राणविहीन सभी पदार्थ जैसे चटान आदि हैं सभी की रचना करते है। हम आपको पाने के लिये अति प्रेम से भक्ति कर रहे हैं व करते रहें ताकी हमे सब सुखों की प्राप्ती हो।

हे प्रभु आपने पृथ्वी प्रकाश देने वाले सूर्य आदि को धारण किया हुआ है। सब लोक लोकान्तरों में आपका वास है अर्थात आप कण कण में विराजमान हैं। हम आपको पाने के लिये अति प्रेम से भक्ति कर रहे हैं व करते रहें ताकी हमे सब सुखों की प्राप्ती हो।

हे प्रभु आप सब जगत में व्यापत है, सर्वोपरी है व एक मात्र स्वामी है। आप से अलग कोई भी इस जगत का स्वामी नहीं हैं। आप सब के पालनहार हैं। आप ही उपासना व स्तुती के योग्य हैं। हे प्रभु अति प्रेम से हम आपकी भक्ति करे ताकी हमारी कामनायें सिद्व हो और हम धन ऐश्वर्य के स्वामी बने।

हे मनु"यो! वह परमात्मा अपने लोगों का भ्राता है। अर्थात;भाई के समान सुखदायक है। सारे जगत का उत्पादक है। वह ही

Contact: Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

सारे संसार को जानने वाला है। मोक्ष; संसारिक दुखः सुख से रहित परम आन्नद को प्राप्त करने के लिये विद्वान लोग जिस प्रभु के आश्रय में जाते हैं वही प्रभु अपना आचार्य,राजा व न्यायधीश है हम उस प्रभु को पाने के लिये अति प्रेम से भक्ति करे हे प्रकाशस्वरूप प्रभु, सही ज्ञान और सही पथ प्रर्दशन के लिये हम आपकी शरण में आए हैं। आप सभी ज्ञानो से परिपूर्ण विद्वान हैं। हम ऐश्वर्य व वैभव के लिये आपसे प्रार्थना कर रहें हैं। हमें ऐश्वर्य व वैभव मिले पर साथ ही कुटिलतापूर्ण कर्मो से भी दूर रहें क्योकिं ऐश्वर्य व वैभव के साथ कुटिलतापूर्ण कर्म विनाश की और ले जाते हैं। हमारी बार – बार यही प्रार्थना है कि हमे अच्छे मार्ग पर ही चलाऐं।

*****

स्वास्थय सुधार के लिये नंगे पांव बगीचे में रोजाना ऐक घंटा चले

पूरी सृ"िट का आधार भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश हैं जिन्हे पंचतत्व कहा जाता है। इन सब को नियंत्रित रखना स्वास्थय के लिये बहुत अच्छा माना गया है। आपने योगियों द्वारा अपने आप को मिटटी में गर्दन तक गाड़े जाने की बात सुनी होगी। यह कोई करतव नहीं, बस अपने अपने सिस्टम को ठीक करने के लिये किया जाता है। यह सब तो मुश्किल है पर आप अपने शरीर को मिटटी से पोत कर यह प्राप्त कर सकते हैं। धरती के सम्पर्क में आने पर शरीर के बहुत से विकार ठीक हो जाते हैं।इस का सब से आसान उपाय है कि बस नगें पांव अपने बगीचे में रोजाना एक घंटे तक चले, पर यह ख्याल रखें की अन्धेरा न हो और कांटे और कीड़े मकोड़े न हो। कहते हैं एक सप्ताह में ही स्वास्थय में बहुत फर्क पड़ जाता है। यही नहीं पलंग पर सोने की जगह फर्श पर सोने से ही काफी फर्क महसूस करेंगे।

पीने का पानी पीतल या तांबे के बर्तन में रखें

आजकल घरों में जो पानी आता है उसे पम्प किया जाता है। जब तक घरों में पहुंचता है कई स्थानों से घूम चुका होता है व काफी हद तक जहरीला हो चुका होता है। अगर आप ऐसे पानी को 10––12 घंटे तक तांबे के बर्तन में रखें तो यह असर काफी हद तक खत्म हो जाता है। पानी को 10––12 घंटे तक तांबे के बर्तन में रखने का रिवाज आज भी तामिलनाडू में प्रचलित है।

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE **अवश्य दे**
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :-**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, ICICI Bank - 659201411714, **IFC Code - ICIC0006592**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

;fn vki cad e tek ugh djok ldr rk
d'i;k **at par** dk pd Hkt nA

Editorial

Celebrity या फिर अनुभवी व गुणी राजनितिज्ञ

हाल में ही समाचार पत्र में पढ़ने में आया कि राहुल गान्धी की भूतपूर्व क्रिकेट खिलाड़ी मोहम्मद कैफ से जब अचानक मुलाकात हुई तो तुरन्त उनके मन में यह ख्याल आया कि मोहम्मद कैफ की क्रिकेट खिलाड़ी के रूप में मशहूरी और मुसलमान चेहरे को लोकसभा में चुनाव जीतने के लिये प्रयोग किया जा सकता है। पूछा–– क्या इलैक्शन लड़ोगे?। जवाब हां में था, और मोहम्मद कैफ को फुलपुर, उतरप्रदेश से टिकट दे दिया गया क्योंकि वहां काफी संख्या में मुसलमान हैं। यह हाल कांग्रेस दल का ही नहीं, सभी का है। अगर कोई celebrity है तो उसको उन सभी की अवेहलना कर एक दम टिकट दे दिया जाता है, जो कि कई सालों से इस के लिये काम कर रहे होते हैं। मैं नहीं समझता कि फुलपुर में ऐसे व्यक्तियों की कमीं होगी जो कई सालों से राजनिती में वैसे ही स्थान बनाने में लगे होगें जैसे मोहम्मद कैफ कई साल तक क्रिकेट में आने के लिये सध”k djr jgA pण्डीगढ़ की बात ही ले लिजिये, आम आदमी पार्टी ने पहले सविता भटी को इस लिये टिकट दिया क्योंकि वह जानेमाने हास्य कलाकार स्व जसपाल भटी की पत्नि हैं। पर जब सविता भटी को लगा कि दाल गलने वाली नही तो एक और जानीमानी हस्ती की तलाश कर एक समय की भारत सुन्दरी गुल पनंग को टिकट दे दिया। भारतीय जनता पार्टी ने जब देखा कि तीन इच्छुक राजनितीज्ञ उम्मीदवारों का मामला सुलझाना मुश्किल है तो एक जानी मानी फिल्मी कलाकार को टिकट दे दिया।

ऐंसा लगता है कि हमारे बड़े नेता यह मानकर चलते हैं कि राजनीती में सफलता के लिये एक ही चीज की आवश्यकता है और वह है कि आप की अच्छी पहचान और नाम, वह चाहे कैसे भी हो। अगर आप अपनी बिमारी के ईलाज के लिये उस डाक्टर को चुनते है जिसने की डाक्टरी की परिक्षा पास की हो और अनुभव रखता हो, अपने वच्चे को उस विद्यालय में भेजते हैं जहां पढ़े लिखे व अनुभवी अध्यापक हों तो यह भी उतना ही आवश्यक है कि लोकसभा या विधान सभा में उसे ही भेजें जिसमें राजनैतिक अनुभव व गुण हैं न कि नौसिखीयों को। राजनिती मे जिस गुणं की सब से अधिक आवश्यकता है वे हैं––सेवा की भावना व समय देने की क्षमता, स्थानीय लोगों व उनकी समस्याओं से वाकिफ होना यही नहीं लोगों की समस्याओं को समय समय पर उठाता रहा हो। कहने का अर्थ है कई सालों से लोगों के साथ जुड़ा हो। अक्सर कहते हैं कि अगर हम चुनाव जीत गये तो आपके लिये काम करेगें। जब कि आवश्यकता उस व्यक्ति को चुनने की होती है जो कि पहले से ही काम कर रहा हो और सेवा द्वारा अपनी पहचान बना चुका हो और न भी चुना जाये तभ भी काम करे।

आज जब की राजनिती सब से महत्वपूर्ण व पसन्दीदा पेशा (profession) बन गया है, बहुत से व्यक्ति इसके लिये अपने आप को वैसे ही तैयार कर रहें हैं जैसे कि I.A.S. या फिर डाक्टरी या I.I.T के लिये कई साल पहले से ही युवा अपने आप को तैयार करना प्रारम्भ कर देते है। दूसरी बात आती है कि अगर किसी प्रांत का Chief Secretary अपना कार्यकाल SDM से प्रारम्भ कर 30 साल तक अलग अलग पदों पर काम कर वहां पहुंचता है तो यह आवश्यक हो जाता है कि लोक सभा में पहुंचनेवाला व्यक्ति भी उसी इलाके के ग्राम, तालुका, शहर, कसबे का प्रतिनिधी रह चुका हो। उसे राजनिती का अनुभव तो हो।

इस लिये मेरा मानना है कि हम अपना मूल्यवान वोट देते हुये यह न देखें कि वह प्रसिद्ध कलाकार, जानामाना अभिनेता या खिलाड़ी है, परन्तु यह देखें कि क्या वह आपके ईलाके के लिये या इस की समस्याओं के लिये समय निकाल सकेगा। यह फुल टाईम काम है। इस के लिये लोकसभा सदस्य को जो वेतन या भते मिलते है वह IAS अधिकारी के वेतन से भी कहीं अधिक हैं। ऐसे में सोचने वाली बात है कि क्या कोई अभिनेता इस के लिये पूरा समय दे सकेगा। बहुत से फिल्म कलाकारों को देखा वह चुनाव लड़ने के लिये झट से तैयार हो जातें हैं पर उसके बाद समय नही देते। मैं मानता हूं कि ऐसे कलाकार भ्र”Vkpkj से दूर रहते हैं पर यह सब कुछ नहीं, पहली चीज है लोंगों के लिये समय देना।

इस लिये आवश्यक है कि हम celebrities के चकाचोधं में न आकर गुणी राजनितीज्ञ को ही चुने। इन दलों के नेताओं को भी यह महसूस कराना आवश्यक है जो कि इन कलाकारों को टिकट इस लिये देकर खुश होते हैं ताकी उन्हे बहस करने वालों की जगह चमचे मिल जायें और उनकी नेतागिरी चलती रहे।

Editorial

A tea boy set to give a memory pill to Mani Shankar Aiyar

Not many have forgotten Mani Shankar Aiyar's outburst. "I promise you in 21st century one time tea boy Narendra Modi will never become the Prime Minister of the country. .. But if he wants to distribute tea here, we will find a place for him."

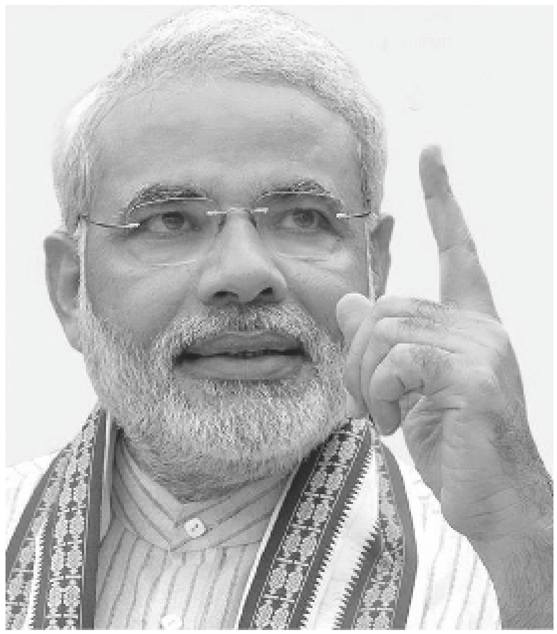

Those public comments against Modi's humble beginnings as a tea boy might have created a storm in a tea cup but to me and perhaps for some others too it smacked of arrogance and disregard for dignity of labour. And I must emphasise that I am not taking up the cudgels for Narender Modi but want to dwell on a very sensitive and all important attribute for any human being called 'dignity of labour' without which no leader who wants to make a mark can be successful or endear himself to the masses for long. To be frank, I couldn't help thinking why can't a once tea boy or cow herd or for that matter even a shoe shine boy aspire to be a CEO, leader or Prime Minister as long as he has the capability and gets elected? Did we not have a Prime Minister, who would cross Ganges swimming every day to reach his school as he could not afford boat travel? And he was none other than India's most endeared and revered Prime Minister Lal Bahadur Shastri whose vary name fills the hearts of every Indian national with unfathomed love and respect.

I really wonder how a person of the stature of Mani Shankar Aiyar who besides being a cabinet Minister was a career diplomat also, could have such a poor memory unless he is overtaken by some memory related disease beyond the comprehension of neurologists even. If he did not remember Lal Bahadur Shastri in his mad love for Gandhi family, that is quite understandable but how he could not remember our Rocket Scientist President APJ Abdul Kalam, whose father was a boatman, leaves nothing to doubt that he suffers from a serious memory disorder especially when you take in to consideration that Mr. Kalam was the President of the country when Mani Shankar Aiyar was a Minister.

Then, how any career diplomat can be ignorant about the famous book 'From a log cabin to the white house' which tells the story of a young boy who grew up to become one of the most important leaders in American history. Born in a log cabin, Abraham Lincoln faced a life of extreme poverty and hardship. Without losing his gentle nature and sense of humour, he surmounted these and many other obstacles to attain the highest office in the land and the enduring love of the American people.

I know from my own experience, in old age memory becomes so weak that one has to be retold about the past events time and again to make one connected to them. Now when Modi wave is sweeping the country I am sure Modi is all set to give a much needed memory pill to Aiyer to remind him that to reach the top and be a leader, one's background matters little as long the person is of sound integrity; has the dreams, has a vision and has the ability to lead and inspire the masses through diligence and dedication for the good of people. Modi will not be the first nor will be the last who walked barefoot to reach school and sold tea in the train to supplement the income of parents and later in life went on to occupy top positions in their countries/states. Democracy is all about bringing out such hidden precious pearls from time to time.

Single minded pursuit of money impoverishes the mind, shrivels the imagination and desiccates the heart.

मीठा जहर

विजय आर्य

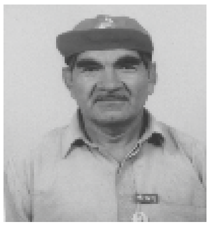

यह कहानी चीन देश की एक लड़की ली–ली के बारे में है जो कि शादी के बाद अपने पति और सास (पति की मां) के साथ रहती थी। थोड़े समय के पश्चात ही ली–ली को ऐसा लगने लगा कि उसकी अपनी सास के साथ नहीं बनेगी। कारण, उन दोनों की आदतें व सोचने का ढंग एक दूसरे से बिलकुल अलग था। यही नही ली–ली
की सास ली–ली को हर समय कोसती रहती थी जिस कारण ली–ली को अपना जीवन नरक के सामान लगता।

समय बीतता गया पर और उस के साथ ही ली–ली और उसकी सास के रिश्तों में
कड़वाहट पहले से भी अधिक बढ़ गई। पर जैसे चीन देश की परम्परा थी ली–ली को अपनी सास की हर बात के आगे झुकना पड़ता था। ऐसे वातावरण में ली–ली का पति भी स्वभाविक तौर पर बहुत अप्रसन्न व परेशान था।

घर में अपनी सास के बढ़ते दब दबे से तंग आकर एक दिन ली–ली अपने पिता के एक मित्र हुआंग से मिली जो कि प्राकृतिक जड़ी बूटीयां बेचता था। ली–ली ने उसको घर की हालत से वाकिफ करवाया और बोली कि क्या वह उसे ऐसा कोई जहर दे सकेगा जो कि उस की सास का काम तमाम कर दे और वह चैन की जिन्दगी जी सके।

हुआंग बहुत समझदार व्यकित था उसे सारी बात समझने में देर न लगी । उसने ली–ली से कहा कि वह उस की सहायता तो करेगा पर शर्त यह है कि वह वैसे ही करे जैसे की वह कहता है। ली–ली ने हुआंग को विश्वास दिलाया कि वह उस के कहे अनुसार ही चलेगी। हुआंग पीछे के कमरे में गया और जड़ी बूटीयां का एक पैकट ली–ली के हाथ में थमाता हुआ बोला–––‘‘ मैं तुम्हें शीघ्र असर करने वाला जहर इस लिये नही दे रहा क्योकिं उससे लोगों को तुम पर शक हो जायेगा। तुम्हें मैने बहुत सारी जड़ी बूटीयां मिला कर दी हैं जो कि आहिस्ता– आहिस्ता उसके शरीर पर जहर का असर करेंगी। इसे आप रोज थोड़ी मात्रा में उसके भोजन में मिलाकर दे सकती हो, पर ,ख्याल रहे कि भोजन बहुत स्वादि"V हो ताकी उसे दवाई के स्वाद का पता न लगे। दूसरा, तुम्हारा व्यवहार उसके साथ इतना अच्छा रहना चाहियें कि उसकी मृत्यु पर कोई

तुम पर संदेह न करे। उसके साथ मित्र बन कर रहो। उसके साथ विल्कुल बहस न करो और उसका हर एक कहना मानो। उसे ऐसा लगना चाहिये कि वह घर की रानी है।

ली–ली वहुत खुश हुई और हुआंग के बताये अनुसार उसने आपनी सास को मारने का कार्य शुरू कर दिया। बहुत स्वादि"V भोजन में दवाई देती। अपनी सास को हर ढंग से खुश रखती। उसने अपने कोध पर पूरी नियन्त्रण कर लिया था।

छे महीने में ही घर का सारा नक्शा ही बदल गया था। ली–ली का मिज़ाज तो विल्कुल ही बदल गया था। उसे कभी कोध न आता और किसी से भी उसका तकरार न होता। उसकी सास का रूख भी उसके प्रती बदल गया था। वह अब ली–ली को बहुत प्यार करती। जब उसकी सहेलियां उससे मिलने आती तो उनसे ली–ली की बहुत प्रशंसा करती और कहती ईश्वर सब को ली–ली जैसी बहू दे। ली–ली और उसकी सास मां बेटी की तरह रहती। ली–ली का पति यह सब देखकर बहुत प्रसन्न था ।

कुछ दिन बाद हुआंग ने देखा कि ली–ली कुछ परेशानी की हालत में उस से मिलने के लिये इंतज़ार कर रही है। कहो ली–ली, कैसे आना हुआ? हुआंग ने पूछा। ली–ली गिड़गड़ाती हुई बोली––––चाचा, क्या तुम ऐसी दवाई नहीं दे सकते जो कि अभी तक के जहर का असर खत्म कर दे ताकी मेरी सास की जान बच जाय। पिछले छ महिने में वह बिल्कुल बदल गई है। अब मैं उसे अपनी मां की तरह प्यार करती हूं। मैं नहीं चाहती कि वह कभी मरे।

हुआंग जोर से हंसा और बोला––– ली–ली चिन्ता करने की कोई बात नहीं। मैने तुम्हें जो जड़ी बूटीयां दी थी वह जहर नहीं उसकी सेहत को सुधारने के लिये ताकत की दवाई दी थी। जहर तो तुम्हारी सोच में था और वह जहर जब तुम ने उसे प्यार करना शुरू किया तो अपने आप खत्म हो गया। क्या तुम जानती नहीं–––सब फसादों की जड़ घृणा है और घृणा केवल प्यार द्वारा ही खत्म हो सकती है। जाओ प्यार से रहों, तुम्हें बदले में प्यार ही मिलेगा। जब प्यार है तो घर और जीवन स्वर्ग है।

HM-42, SECTOR - 54, MOHALI, M-09988505690

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values'

* If you plant honesty, you will reap trust
* If you plant goodness, you will reap friends
* If you plant humility, you will reap greatness
* If you plant perseverance, you will reap contentment
* If you plant consideration, you will reap perspective
* If you plant hard work, you will reap success
* If you plant forgiveness, you will reap reconciliation

So, be careful what you plant now;

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

Make your revenge sweet

Neela Sood

To pay back in the same token or an eye for an eye may sound aphoristic but are not without their pernicious after effects. You may end up winning a battle but in one corner of the heart you feel empty having lost something valuable. In the words of Mahatma Gandhi, "An eye for eye only ends up in making the whole world blind" As time passes, regrets overtake a sense of achievement. In the face of this, there is another way to avenge, called sweet revenge, which is any day more salubrious as this is capable of bringing a change in wrong doer's mind apart from filling avenger's heart with a new found acquisition. This often turns your foes in to friends, a remarkable achievement considering that more the friends you have, stronger and more inviolable you feel on this planet.

It is said that during the days of the Berlin Wall, some East Berliners, who had developed huge animosity towards the West Berliners, decided to send a 'gift' to them with an intention to inflict humiliations. They loaded a truck with garbage, broken bricks and other rubbish and stealthily transported it to the West Berlin side. When the West Berliners discovered it, they were incensed and wanted to pay back in the same coin. One wise person persuaded them instead to load the truck with food, clothes and medical supplies, all very scarce and valuable for East Berliners. They also left a note, 'Each gives according to his ability to give.' Needless to say, the act led to a greater understanding and a better relationship between the two sides.

Men of wisdom know this great virtue and practice it. One religious bigot would daily hurl abuses on reformer sage Swami Dayanand Saraswati for his war against superstitious and regressive beliefs. One day, one of Swami's followers brought a box of fruit for him. He instantly summoned his disciple and asked him to take some of the fruit to the man in ochre clothes who would

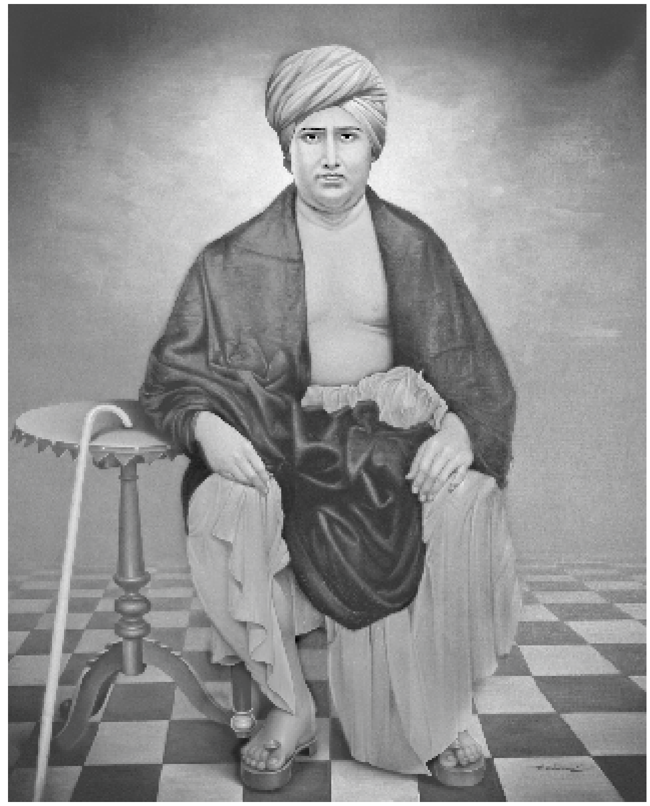

abuse him every day, with the message that he needed these very much since lot of his energy was consumed in dishing out the feelings he had for him. Though bit confused, the disciple followed his Guru's instructions and delivered the fruit and his guru's message. Totally baffled the man was so ashamed that he rushed to seek Swami ji's pardon and became his ardent follower. This goes to manifest how one small act of magnanimity can transform a foe in to a friend. This is the power of sweet revenge.

Sweet revenge rather than eye for eye approach can play a very important role in building relationships in today's world when orgy of hatred and resultant violence has made one man fear another man, something most shameful for the humanity.

vxj vkidk dN dguk g ;k if=dk subscribe djuh g
dI;k fuEu address ij lEidZ dj
Hkkjr Un ln] 231 lDVj& 45-A, p.MhxM-160047
0172-2662870] 9217970381] E mail : bhartsood@yahoo.co.in

धन–दौलत में नहीं, परिश्रम व सृजन में ही निहित है वास्तविक प्रसन्नता

सीताराम गुप्ता,

हम सब अपने जीवन को अपार खुशियों से भरना चाहते हैं। इसके लिए खुशहाली व समृद्धि की कामना करते हैं। ख़ुशहाल होने के लिए जी तोड़ परिश्रम भी करते हैं। समृद्धि पाने के लिए कई बार हम अपने स्वास्थ्य से भी समझौता कर लेते हैं तो कई बार नियम–कानून व नैतिक मूल्यों से भी लेकिन समृद्धि के बावजूद खुशी है कि दस्तक देने का नाम नहीं लेती। यदि वास्तव में ख़ुशी का संबंध आर्थिक समृद्धि से होता तो हम सब येन केन प्रकारेण आर्थिक समृद्धि प्राप्त कर लेते। प्रसन्नता पाने के लिए दूसरों की संपत्ति पर क़ब्ज़ा कर लेते अथवा चोरी–डकैती द्वारा धन एकत्र कर लेते लेकिन धन–दौलत से प्रसन्नता का दूर–दूर तक का कोई नाता नहीं।

पैसों से नर्म–मुलायम बिस्तर ख़रीदा जा सकता है नींद नहीं। पैसों से आलीशान मकान बनवाया या ख़रीदा जा सकता है घर नहीं बनाया जा सकता। पैसों से क़ीमती कलाकृतियाँ क्रय की जा सकती हैं कलाकार नहीं बना जा सकता। पैसों से ऐशो–आराम का हर सामान ख़रीदा जा सकता है ख़ुशी नहीं। प्रसन्नता का उत्कर्श तो जीवन प्रवाह के संघर्श में है। यात्रा का आनंद गंतव्य तक पहुँचने में नहीं यात्रा के मार्ग की दुर्गमता व कठिनाइयों में है। यदि यात्रा के मार्ग में केवल सुख–सुविधाएँ बिछी हों तो गंतव्य अथवा लक्ष्य नीरस प्रतीत होगा। लय, गति व सर्जनात्मकता में ही निहित है सौंदर्यानुभूति व इसी सौंदर्यानुभूति से प्रकट होती है प्रसन्नता।

प्रसन्नता का संबंध तो परिश्रम से है। जब हम जी तोड़ मेहनत करते हैं और उसके बदले कुछ पाते हैं तभी प्रसन्नता मिलती है। बाज़ार जाकर वहाँ से फूल ख़रीद लाने अथवा माली से गमलों में फूलों के पौधे लगवा लेने में वैसी ख़ुशी कहाँ जो स्वयं परिश्रम करके फूल उगाने में मिल सकती है। वास्तविक प्रसन्नता तो मिट्टी को कूट–पीटकर उसमें बीज बोने, पौधे उगने पर उनकी देखभाल करने, उनमें खाद–पानी देने व बड़े होने पर फूल–फल प्राप्त करने में है। और उससे भी अधिक प्रसन्नता तो प्राप्त फल–फूलों को दूसरों को भेंट कर देने में है। आज भी ग्रामीण अंचल के लोग फसल आने पर सबसे पहले उसका कुछ भाग अपने पड़ौसियों, मित्रों अथवा अन्य किसी ज़रूरतमंद को दान में दे देते हैं।

किसी बड़े होटल में महँगे खाने से ज़्यादा स्वाद तो माँ, पत्नी अथवा नन्ही बिटिया के बने उस खाने में होता है जब वह अपने नन्हे–नन्हे कोमल हाथों से खाना बनाना सीख रही होती है। खाने में ही नहीं खिलाने में भी कम आनंद नहीं होता। अनिर्वचनीय होता है वह सुख। आनंद या प्रसन्नता केवल पाने में ही नहीं देने में उससे भी ज़्यादा है। प्राप्त ख़ुशी को बाँटना हो अथवा दूसरों की पीड़ा को दूर करने का प्रयास, दोनों में अद्वितीय आनंद है। निदा फ़ाज़ली का एक शेर याद आ रहा है:

घर से मस्जिद है बहुत दूर चलो यूँ कर लें,
किसी रोते हुए बच्चे को हँसाया जाए।

कुछ लोग अच्छा लज़ीज़ भोजन करके ख़ुशी पाना चाहते हैं लेकिन भोजन में ख़ुशी कहाँ यदि वह ठीक से न किया जाए। ठीक से भोजन करने का तात्पर्य यह है कि भूख लगने पर ही भोजन किया जाए। भोजन सात्त्विक हो तथा आजीविका सम्यक। कहते हैं कि भूख में किवाड़ पापड़। भूख न देखे बासी भात। विद्यासागर नौटियाल की कहानी ''माटीवाली'' याद आ रही है। माटी बेचनेवाली ग़रीब मजदूर बुढ़िया रूखी–सूखी बासी रोटी मिलने पर भूख की महिमा का गुणगान करते हुए कहती है कि भूख मीठी कि, भोजन मीठा। ऐसी होती है भूख की महिमा।

भूख ही भोजन को स्वादिष्ट बनाती है। भूख न हो तो भाँति–भाँति के रसदार व्यंजन भी बेकार हैं। बिना भूख खा भी लिए जाएँ तो उदरशूल अथवा अपच का कारण बनेंगे। जीवन में भोजन का वास्तविक आनंद चाहिए तो भूख लगने पर ही भोजन करें। जितनी ज़्यादा भूख होगी भोजन उतना ही अधिक स्वादिश्ट लगेगा, सरलता से पचेगा और शारीरिक ही नही मानसिक संतुष्टि भी मिलेगी। बेकार बैठे व्यक्ति को भी कम भूख लगती है अतः भूख ठीक से लगे इसके लिए शारीरिक श्रम भी अनिवार्य है। यदि काम–धंधे या नौकरी में शारीरिक श्रम नहीं करना पड़ता है तो दौड़ लगाइए अथवा व्यायाम कीजिए।

प्रसन्नता के लिए कुछ न कुछ करना, थकना ज़रूरी है। बाग़बानी कीजिए या घर की सफाई, पसीना निकलना और थकना ज़रूरी है। थकान के बिना न तो आराम का ही मज़ा है और न अच्छी भूख और भोजन का ही और न गहरी नींद ही संभव है। थककर चूर हो जाने पर आराम करने में, ज़ोरदार भूख लगने पर भोजन करने में और इन सबके परिणामस्वरूप गहरी नींद सोने में जो आनंद है वह अन्य किसी भी प्रकार की भौतिक समृद्धि, राग–रंग व पद–प्रतिश्ठा में नहीं मिल सकती। ऐसा करेंगे तो आजीविका भी सम्यक होगी और सम्यक आजीविका से बड़ी प्रसन्नता की बात हो ही नहीं सकती।

ए.डी. 106–सी, पीतम पुरा, दिल्ली – 110034
फोन नं 09555622323

No pain, no gain

Bhartendu Sood

A rupee earned is of far more value than five found.

According to country's one of top businessmen and philanthropist Azim Premji: 'A rupee earned is of far more value than five found.' When people are asked to narrate their most memorable achievements, they usually recount those which needed maximum effort. It is almost as if the pain they faced is now an integral part of their pleasure. What is inherited or gifted follows the old rule of 'easy come, easy go'. We only know the value of what we have if we have struggled to earn it.' It is for this reason that another great philanthropist Bill Gates opined that the wealth created by you should first reach those who deserved it and could value. Most likely it'd be easy money for your children who might not value it.

This apart, wealth earned by the sweat of the brow teaches us lessons in team spirit, humility and empathy.There is an interesting story that sums this all up. A woman dreamt that she had walked into a brand new shop and found God behind the counter.

'What do you sell?' she asked.

'Everything your heart desires,' answered God.

The woman decided to ask for the best things she could think of. 'I want peace of mind, love, happiness, wisdom and freedom from fear.'

God smiled and said, 'My dear, you have got me wrong. We don't sell fruits here, only seeds. You must be well aware that if the seed sprouts, grows, becomes a tree or a

wealth created by you should first reach those who deserved it and could value. Most likely it'd be easy money for your children who might not value it.

shrub only then it bears fruit which you want to have. Therefore, these seeds which I give you will have to be planted and nourished with your labour, dedication, spirit of service and love to have fruit at the right time. Most importantly you ought to have lot of patience, forbearance and capacity to face pains and absorb unanticipated problems. Even the noble souls who reached me, underwent self cleasing and self mortification by putting lot many restrains on them and lead a life of austerities and self discipline which not every body can do. Always remember---No pain, no gain.'

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Amit Arts 36 MW Industrial Area, Ph-I, Chandigarh 9216504644
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

आ गया सबका नववर्ष ! स्वागत की तैयारी करें सहर्ष!!

डॉ0 जगदीश शास्त्री

आर्यसभ्यता प्राचीन ही नहीं प्राकृतिक natural भी है। यहॉ की सम्पूर्ण जीवन पद्धति प्रकृति के साथ अनुकूलित है। प्रकृति में परिवर्तन के साथ–साथ जीवन में परिवर्तन, भोजन में परिवर्तन, रहन–सहन, वेश–भूषा में परिवर्तन और ऋतु के अनुसार पर्व त्योहारों में परिवर्तन यहॉ की विशेषता है। जब सर्दी का अन्त होने लगता है, सूर्य उत्तरायण में आता है, दिन बढ़ने और रात घटने लगती है, प्रकाश अधिक और अन्धकार कम होने लगता है। जब दिन–रात, अन्धकार–प्रकाश और सर्दी–गर्मी सभी सम हो जाते हैं, सारी धरती (प्रकृति) वातानुकूलित हो जाती है, तब ऋतुओं का राजा वसन्त आता है। तब न अधिक सर्दी रहती है न असह्य गरमी। सभी प्राणियों में नवजीवन का संचार हो जाता है। जीव–जन्तु प्रसन्नता से खेलने–कूदने लगते हैं। पछी चहचहाने लगते हैं। पेड़–पौधों में नई कोपलें और कलियॉ खिलने लगती हैं। वृक्ष–वनस्पति नई पत्तियों और फूलों के रंगीन परिधान में सुशोभित होने लगते हैं। रंग–विरंगे फूलों के सुगन्ध से दिशाऍ दमकने–महकने लगती हैं। मकरन्द पान कर कीट–पतंग व भौंरे मस्त हो जाते हैं। प्रकृति में सर्वत्र नवीनता छा जाती है। पशु–पक्षी, कीट–पतंग से लेकर मनुष्य समाज तक सबमें नव–सन्तति सृजन के लिए प्रजनन किया जाता है। मनुष्य समाज इसी समय (फाल्गुन–चैत्र महीनों में) विवाह रचाता है और आनन्द मनाता है। नवदम्पत्ती नवसन्तति सृजन का सूत्रपात करते हैं.......ऐसे ही मौसम में, ऐसे ही वातावरण में जब सब कुछ जीवन्त होता है, सबकुछ नवीन होता है, पूरी प्रकृति का साथ होता है तब आर्यलोग **चैत्रमास की पहली तिथि को नववर्ष का उत्सव मनाते हैं।** यही आर्यसभ्यता के अनुसार नववर्ष के आरंभ का दिन है। यही चैत्रमास शुक्लपक्ष की पहली तिथि है जब परब्रह्म ने 1,96,08,53,115 वर्ष पहले सृष्टि का सृजन किया था। मनुष्य समाज धरती माता की कोख से जन्म लिया था। सूर्य, चॉद, धरती और सम्पूर्ण सृष्टि को अपनी ऑखों से निहारा था। परमात्मा का धन्यवाद किया था और दिनों की गणना आरंभ की थी। अतः यह नववर्ष का दिन सृष्टि का जन्मदिन है। सूर्य और चॉद का जन्मदिन है। धरती और आकाश का जन्मदिन है। पूरी मानवजाति का जन्मदिन है। मानवता और मानवसभ्यता का जन्मदिन है। इसीलिए इसे '**मानवसंवत्,**' व '**सृष्टिसंवत्**' कहते हैं। ईश्वर की यह सृष्टि प्राणीमात्र के लिए है। पूरी मनुष्य जाति के लिए है। इसलिए इस दिन सभी धरतीवासी नववर्ष मनाया करते थे। धरती पर रहने वाले सभी मनुष्यों को यह जानना चाहिए कि जुलियन कैलेण्डर से पहले जैसे चैत्रमास के प्रथम दिन नववर्ष का आरंभ मनाते थे वैसे ही अब भी प्रथम चैत्र को नववर्ष के रूप में मनाना चाहिए। इसे अन्ताराष्ट्रीय नववर्ष घोषित किया जाना चाहिए। जबसे लोग देश, जाति और सम्प्रदाय के टुकड़ों में बंट गए हैं तब

मानवसंवत् सृष्टिसंवत् को मनाना छोड़ दिया और अपने सम्प्रदाय के जन्मदिन को तथा सम्प्रदाय के संस्थापक व्यक्ति के जन्मदिन को ही नववर्ष के रूप में मनाने लगे हैं। प्रकृति के प्रतिकूल परिस्थितियों में स्वकल्पित नववर्ष मनाते हैं–जैसे कि एक जनवरी का दिन। इस समय प्रकृति पूरी तरह प्रतिकूल रहती है। ठण्ढ के कारण पशु–पक्षी ही नहीं प्रतिवर्ष हजारें मनुष्य इस मौसम की बलि चढ़ जाते हैं। मनुष्य ही नहीं पशु–पक्षी से लेकर वृक्ष–वनस्पति तक अपने जीवन की सुरक्षा की चिन्ता में देखे जाते हैं। ऐसे कष्टकर वातावरण में, निष्ठुर मौसम में केवल साधन सम्पन्न धनाढ्य लोग ही प्रसन्न हो सकते हैं। वातानुकूलित महलों के बन्द कमरों में मदिरा और मांस जैसे अप्राकृतिक, अमानवीय खान–पान कर मौज–मस्ती का दिखावा मात्र कर सकते है। इस नववर्ष में प्रकृति का साथ कहाँ? सांप्रदायिक अन्धविश्वास तथा कट्टरता व्यक्ति को कितना विवेकहीन और निष्ठुर बना देता है यह इसीसे पता चलता है कि वंसतऋतु जैसे सबसे सुखद ऋतु में सनातनकाल से होने वाला सच्चा नववर्ष को छोड़कर साम्प्रदायिक दुराग्रह के कारण साल के सबसे दुःखद ऋतु में दिसंबर–दसवॉं महीना को बारहवां महीना घोषित कर दिया और ग्यारहवां महीना जनवरी को नववर्ष का प्रथम महीना घोषित कर दिया। जबकि सच्चाई इससे सर्वथा भिन्न है। स्वयं दिसंबर मास भी तो संकेत कर रहा है कि अभी दसवॉं अंबर (दसम्बर) ही है अर्थात् वर्ष का दसवॉं महीना। सितंबर–सप्त अबंर अर्थात् सातवॉं महीना, अक्टूबर–अष्ट अंबर = आठवॉं महीना और नवंबर–नव अंबर = नवॉं महीना है। तभी तो दिसंबर में x-màs मनाते हैं। x का अर्थ रोमन में 'दस' होता है और massमास' का अर्थ 'महीना' है ही। अर्थात् x-maś का अर्थ–दसवां महीना है। स्पष्ट है दिसम्बर–दसवॉं मास है तो जनवरी=ग्यारहवॉं और फरवरी बारहवॉं महीना है। मार्च का अर्थ–'आगे बढ़ना' होता है। मार्च से नववर्ष आगे बढ़ता जाता है। इसी दिन से शिक्षा का नवीन सत्र आरंभ होता है। व्यापार–सत्र बदलता है। बही–खाते बदले जाते हैं। मार्च महीना से सरकार नये बजट के प्रावधानों का क्रियान्वयन करती है। मार्च यानि चैत्र का महीना। वसन्तऋतु। वर्ष का पहला महीना यही है। इसी महीने से सभी नवसत्रों का आरंभ होता है। चैत्र से ही सृष्टिसंवत् बदलता है। मानवसंवत् और युगसंवत् बदलता है। इसी दिन विक्रमसंवत् का नववर्ष भी आरंभ होता है; क्योंकि सनातन वैदिकधर्म के ज्योतिर्धर, आर्यावर्तीय सभ्यता और संस्कृति के रक्षक, जन–गण मन के अधिनायक, देशभक्त राजा विक्रमादित्य का आज के दिन ही राज्याभिषेक हुआ था। उन्होंने शक आक्रांताओं को पराजित कर स्वराज्य की स्थापना की थी। भारतीय संविधान में शकसंवत् को राष्ट्रीयसवंत् माना है यह बड़ी लज्जा एवं पराक्रमी पूर्वजों के प्रति कृतघ्नता की बात है। ठीक ही है यदि हम ऐसे कृतघ्न न होते तो मुगलों और अंग्रजों की अधीनता में पुनः–पुनः क्यों फंसते? बारम्बार पराधीन क्यों होते? स्मरण रहे कि ये शक आक्रान्ता और ईसामसीह के अनुयायी ही थे जिन्होंने इस पवित्र भारत भूमि पर सैकड़ों वर्ष अत्याचारपूर्ण शासन करते रहे। सतत् संघर्ष और असंख्य वीरों के बलिदान के पश्चात् जिनसे हम स्वतन्त्र हुए–यह ईसवी सन् और शकसंवत् हमारी उसी परतन्त्रता के स्मारक चिह्न हैं। पराधीनता के इन निशानों को शीघ्र मिटाने की आवश्यकता है न कि मनाने की।..... .अस्तु। यह मौसम, यह सूर्य, यह धरती, सजी हुई प्रकृति, ज्योतिष की गणना व महीनों के नाम, प्राचीन आचार तथा लोक और सरकार का व्यवहार, सबका यही कहना है कि–**यही है नववर्ष ! यही है नववर्ष ! अतः आईये चैत्र को प्रथम मास के अनुसार कालनिर्णय (कैलेण्डर) का विपुल मात्रा में निर्माण और वितरण कर प्रचार करें। प्रत्येक समाज में जगह–जगह इसका आयोजन करें। अभिनंदन–पत्रों का प्रेषण तथा नववर्ष की शुभकामनाओं का आदान–प्रदान कर नववर्ष मनाएं।**

ध्यातव्य– 1582 ई0 में पोप ग्रेगरी अष्टम ने जुलियन कैलेण्डर की जगह ग्रिगेरियन कैलेण्डर चलाया। जूलियन कैलेण्डर का आधार वैदिकज्योतिष व रोमन कैलेण्डर था। इसिलिए जूलियन कैलेण्डर में मार्च वर्ष का पहला महीना होता था। पोप ने ईसाईयत का प्रभाव फैलाने के लिए ईसामसीह के जन्म वाले दिसम्बर मास ग.ड ौ को अन्तिम मास और जनवरी को प्रथम महीना घोषित किया। वस्तुतः महीनों का क्रम निम्नप्रकार है–

1.चैत्र–March 2.बैशाख–April 3.ज्येष्ठ–May 4. आषाढ–June
5.श्रावण–July(Quintilis=five) 6.भाद्र–August-(sextillus=six)
7.आश्विन&September 8.कार्तिक–October 9. मार्गशीर्ष–November
10.पौष–December 11.माघ–January 12. फाल्गुन–Fabruary

जुलाई का लैटिन नाम Quintius है जिसका अर्थ है–पॉंच। अर्थात् जुलाई पाचवॉं महीना है। अगस्त का लैटिन नाम Sextillus है जिसका अर्थ है–छः। अर्थात् अगस्त छठा महीना है। लैटिन Septem] Octo] Novem] Decem का संस्कृत और अंग्रेजी में क्रमशः सात, आठ, नव, दश अर्थ है। अर्थात् September] October, November, December **ये क्रमशः सातवॉं, आठवॉं, नवॉं, दशवॉं महीना हैं। जुलाई जूलियस सीजर के नाम पर और अगस्त जूलियस ऑगस्टस् के नाम पर रखा गया है। शेष महीनों के नाम विभिन्न रोमन देवी–देवताओं के नाम पर रखा गया है। अस्तु।**

सृष्टिसंवत्–1,96,08,53,116,
कलियुगसंवत्–5116,
विक्रमसंवत्–2071 तथा
शकसंवत्–1936 की हार्दिक बधाइयॉं एवं शुभकामनाएं !

वैदिक प्रवक्ता चण्डीगढ़, चलभाषांक–9417621632

न्याय

मनमोहन कुमार आर्य

बादशाह अकबर के काल में एक न्याय की घटना प्रस्तुत है। एक बार घी के दो व्यापारी गोविन्दसेठ और किशनसेठ अकबर के पास आये। गोविन्दसेठ ने किशनसेठ की शिकायत करते हुए कहा कि 6 माह पहले किशन ने मुझसे पैसा उधार लिया था। मांगने पर भी लौटा नहीं रहा है। किशनसेठ ने गोविन्दसेठ की बात का प्रतिवाद किया और कहा कि उनमें पैसों का कोई लेन देन नहीं हुआ, गोविन्दसेठ झूठ बोल रहा है। गोविन्द ने अकबर को बताया कि उसने एक हजार चांदी के सिक्के किशन को दिये थे। अकबर मुश्किल में पड़ गये और उन्हें एक सप्ताह बाद आने को कहा। उनके जाने के बाद अकबर ने बीरबल को बुला कर पूरी घटना बताई और दोनों में कौन सच्चा है व कौन झूठा, यह जानने में सहायता करने को कहा। बीरबल ने दो दिन का समय मांगा। उसने पहले गोविन्दसेठ की दुकान पर जाकर कहा कि उसे पैसों की जरूरत है। उसके पास घी का एक टीन है उसे वह बेच दें और जो पैसे मिले उसे दे दें। फिर वह किशन सेठ की दुकान पर गया और उसे भी घी का एक टीन देकर वहीं बातें कहीं। सायंकाल गोविन्दसेठ बीरबल के पास आया और एक सोने का सिक्का लौटाकर कहा कि यह आपके टीन में पड़ा मिला, इसे रखिये। फिर उसने बताया कि घी 30 सेर था, एक रूपये प्रति सेर में बिका और तीस रूपये बीरबल को दिये और चला गया। गोविन्द के जाने के बाद किशन आया और बीरबल को बोला कि आपके कनस्तर में 25 सेर घी था, 20 रूपये में बिका है और बीरबल को 20 रूपये दिये। बीरबल ने धन्यवाद किया। इसके बाद बीरबल अकबर के पास गया और सारी घटना सुनाकर कहा कि गोविन्दसेठ सच्चा है और किशनसेठ झूठा व चालाक। उसने सोने का सिक्का नहीं लौटाया, 30 सेर घी को 25 सेर बताया और पैसे भी पूरे नहीं दिए। आठ दिन बाद दोनों सेठ अकबर के पास आये। अकबर ने किशन सेठ को कहा कि तू बेईमान है, गोविन्दसेठ के पैसे लौटा और झूठा वाद लाने के लिए उसकी निन्दा कर उसे हवालात की सैर कराई।

ऐसी ही एक घटना महाराजा रणजीत सिंह के काल की बताई जाती है। एकबार रणजीत सिंह अपने सैनिकों के साथ कहीं जा रहे थे कि उनके माथे पर एक पत्थर आकर लगा
जिससे उन्हें माथे से रक्तस्राव होने लगा। सैनिकों ने पत्थर मारने वालों को ढूंढा। उन्हें एक महिला और एक बच्चा मिला, उन्हें महाराजा के सामने पेशा किया गया। महिला ने बताया कि वह कई दिनों से भुखी थी। भोजन की तलाश की तो आम का एक पेड़ दिखाई दिया। आम काफी

उंचाई पर लगे थे। अतः उसने आम तोड़ने के लिए पत्थर मारा जो गलती से महाराजा को लग गया। उसने अपने अपराध की क्षमायाचना की। वह महिला सजा के डर से कांप रही थी। राजा रणजीत सिंह ने कुछ क्षण सोचकर अपने सैनिकों को कहा कि महिला को राजकीय भोजनालय में ले जाकर भोजन कराओ और इसे प्रत्येक महीने 5 सेर घी, 5 सेर मीठा, 30 सेर आटा और आवश्यकतानुसार मसाले व भोजन का सभी सामान दिलवाओं। 15 रूपये मासिक पेंशन भी देने की आज्ञा की। यह सुनकर महाराज के साथियों ने कहा कि यह सजा है या पुरूस्कार। इस पर महाराजा बोले कि जब एक जड़ व अचेतन वृक्ष पत्थर मारने वाले को फल देता है, उसकी भूख दूर करता है तो मैं पंजाब नरेश यदि इतना भी न दे तो उसे धिक्कार है। न्याय के क्षेत्र में यह दोनों घटनायें बहुत महत्व रखती हैं। उपर्युक्त लेख से न्याय का स्वरूप हम जान गये हैं।

196 चुक्खूवाला-2, देहरादून।

if=dk e fn;s x;s fopkjk d fy, y[kd Lo;s ftEeokj gA y[kdk d VyhQku u- fn, x, g U;kf;d ekeyk d fy, p.Mhx< d U;k;y; eku; gA

अपनी खुशियों को बाटें

उवर्शी गोयल

एक बार महात्मा और उनका चेला एक गांव से गुजर रहे थे तो उन्होने देखा कि वहां के लोग बहुत गुस्से वाले थे जो कि बात बात पर लड़ रहे थें । महात्मा को देख वे सभी उनके पास आ गये। उन्होने महात्मा को कुछ दिन ठहरने के लिये कहा। पर महात्मा का मन नहीं माना, महात्मा ने उनको आर्शीवाद दी और सलाह दी कि वे मिल कर इसी गांव में रहें, वाहर न जांये।

जब वे अगले गांव में पहुंचे तो देखते हैं कि वहां के लोग बहुत खुशी से अपना जीवन बित्ता रहे थे। खुशी उन के चेहरे और बातों में झलक रही थी। कुछ दिन वहां रूके तो देखा कि वे एक दूसरे की सहायता करते थे। एक दूसरे के लिये संवेदना थी, सुख दुख में एक दूसरे के काम आते थे । महात्मा ने उनको भी आर्शीबाद दी और सलाह दी कि वे उसी गांव में न पड़े रहें बल्की आस पास के सारे गांवों में फैल जायें।

चेला यह सब देख हैरान हुआ और महात्मा से पूछा कि उसने दोनो गांव वालों को अलग अलग सलाह क्यों दी। महात्मा चेले के इस प्रश्न पर मुस्करा दिये और बोले––––" पहले गांव वाले जो बात बात पर लड़ते हैं, एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करतें हैं अगर दूसरी जगह चले गये तो यही कुछ वहां फैलायेंगे, इसलिये मैने उनको सलाह दी कि वे बाहर न निकले वहीं रहें। इस के विपरीत, दूसरे गांव वाले एक दूसरे से मिलकर खुशी से रहते है जब दूसरी जगह जायेंगे तो यही कुछ लोग उन से सीखेगे। इस लिये अच्छा है कि वे अधिक से अधिक नये स्थानों पर पहुंच कर अधिक से अधिक लोगों को अच्छा जीने का ढंग सीखायें।

एक और कहानी

एक बार एक व्यक्ति महात्मा के पास नये ताजे अंगूर लेकर पहुंचा और बोला––––महात्मा मैं अपने बाग के सब से अच्छे अंगूर आपके लिये ले कर आया हूं। महात्मा वहुत खुश हुये और बोले–– ऐसी बात है तो इन्हे मैं अपने गुरू के लिये ले जाता हूं, वह इन्हे खा कर बहूत खुश होंगे इस से मुझे भी वहुत प्रसन्नता होगी। वह व्यक्ति बोला–––पर महात्मन यह तो मैं आप के लिये ले कर आया हूं। आप मेरा इतना ख्याल रखतें हैं। जब मेरी फसल खराब हो गई थी तो आपने मेरी कितनी सहायता की थी। कितनी बार जब मेरे घर में खाने की भी मुश्किल थी तो अनाज दिया। मेरा मन कृतज्ञता से भरा हुआ है। मैं चाहता हूं कि यह अंगूर आप ही खायें।

बेटा, अगर मैं आप के लिये कुछ कर भी सका तो यह शिक्षा मुझे मेरे गुरू ने ही दी। अगर मैं उनके सम्पर्क में न आता तो शायद यह सब न करता। इसलिये यह अंगूर मैं अपने गुरू को ही दूंगा।

महात्मा अंगूर लेकर अपने गुरू के पास पहुंचे। गुरू ने देखे तो बहुत खुश हुये पर तभी सपाट से बोले। तुम ने बहुत अच्छा किया जो यह अंगूर ले आये। हमारे आश्रम में एक व्यक्ति कई दिनो से रोगी है, उसके लिये यह अंगूर बहुत लाभप्रद होंगे। महात्मा और उनके गुरू अंगूर लेकर उस रोगी के कमरे में पहुंच गये। रोगी को जब मालुम हुआ कि उसके लिये इतने रसेदार अंगूर ले कर आये हैं तो उसका मन भर आया और बोला–––आप मेरा इतना ध्यान रखते है, मेरे पास इसको बयान करने के लिये शब्द भी नहीं। पर मेरी यह ईच्छा है कि यह अंगूर मैं उस सेवक को दूं जो अपनी परबाह किये बगैर दिन रात मेंरी सेवा करता है, मुझे शीघ्र ठीक करने के लिये पो"Vक आहार खिलाता है। महात्मा और उनके गुरू अंगूर लेकर उस रोगी के सेवक के पास पहुंचे और अंगूर उसको देते हुये उस रोगी की इच्छा उसको बताई। सेवक गुरू के चरणों में गिर पड़ा––––हे गुरू देव मुझे तो यह भी याद नहीं मैं कब और कैसे इस आश्रम में आया। आपने सेवा करने का सबक सिखाया तो इतना प्यार पा रहां हूं। मैं चाहता हूं यह अंगूर आप खायें।

सबको बांट के खाने मे ही आन्नद है।

गुरू देव की आंखों में अश्रू वह रहे थे। उन्होने कभी न सोचा था कि उनका आश्रम देवताओं का वास बन जायेगा जहां हर कोई अच्छी वस्तु पहले दूसरे को ही देना चाहता हो। गुरू देव ने सेवक को कहा अंगूर सब में बांट दो।

ईश्वर से प्रेम करने वाले व्यक्ति, ईश्वरीय गुणों से भरपूर होते है। वे कुछ भी लेने की बजाये दूसरों को देना चाहतें है। कृतज्ञता उनके अन्दर वास करती है। वे सब कुद ईश्वर का दिया हुआ मान कर ही चलते हैं।

Brave mother of a soldier

It had been a quiet day at their home in Mumbai when Anuradha Gore had a difficult promise to make. Her son, Vinayak, a Captain in the 31st Medium Artillery Regiment, had learnt that he had been posted near the border, and that too, at the height of the insurgency in Kashmir. "Promise me you will not cry if something untoward happens," Vinayak asked of her, "Remember you are a captain's mother."

Gore gave her son that assurance in the hope she would never have to honour it. On 26 September 1995, however, he was killed in Kupwara. He was just 26 years old. True to her word, Gore never cried in public after his death. But she also made herself another promise: that she would keep his memory alive.

In the 18 years since Vinayak died, the retired school principal has done her best to fulfil her oath. She has given talks to students and others on the Army, soldiers and their work. She has written columns in newspapers on the same. She has authored eight books in Marathi, most of them about soldiers, and is presently penning what could be the first book in this language on Siachen and what it takes to guard it. She has inspired a large number of young men and women in Maharashtra to join the Army.

At the age of 65, Gore also teaches children as part of her voluntary work including deaf-and-mute students.

Gore talks about her son with pride: Vinayak had always been different. Her uncle and aunt lived nearby, and, as a boy, he would often spend time at their house, where her uncle, a voracious reader, regaled him with tales of valour. Gore is from Satara and her mother's house had a sword, an ancestral heirloom, that Vinayak would play with on visits there during vacations. He was an avid reader; by the time he was in class VI, he knew by heart almost all of Babasaheb Purandare's 700-page biography of Chhatrapati Shivaji, the region's great warrior-ruler of the 17th century. The boy's father, Vishnu Gore, who later retired as an ICICI executive, would sit with him every evening and make him read aloud Bhagwat Gita. "Perhaps that made him aware of his duty to the Motherland. He was also influenced by the talk of Krishna, who tells Arjun to pick up arms to fight injustice." says Anuradha Gore.

For a month after her son's death, Gore stayed cooped up at home in grief. But people didn't let the family grieve alone. Strangers kept visiting and writing to them. Their neighbourhood did not celebrate Navratri, Dussehra or Diwali that year.

What changed Gore's course of life was a phone call a few days later. It was from the principal of the school where she taught. She wanted Gore to resume work. "Countless Vinayaks are waiting for you," she said. And this is when Gore felt the need to do something for those who had stood by her in her grief. "I felt I owed something to them," she says. Soon after, a school in Thane invited her to give a talk on Hutatma Diwas. It was the first time that she spoke about soldiers and how hard they worked to defend the country. After this, she made a speech to thousands of listeners at a stadium on the invitation of the Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP), the Sangh Parivar's youth wing. She held the audience in rapt attention, and was convinced that this was a good way to support the forces and their cause.

विज्ञापन

;g if=dk f'kf{kr oxZ ds ikl tkrh gS vki mi;qDr oj o/kq dh ryk'k]fiz; tu dks J)k lqeu] viuk 0;kikj dks vkxs ys tkus ds fy;s 'kqHk&v'kqHk lpuk foKkiu }kjk nsa ldrs gSA

प्रेरक—वाक्य

स्वामी सत्यपति परिव्राजक

1 सहनशील, सत्य के मार्ग पर चलने वाला, जिज्ञासु व्यक्ति ही योग मार्ग में आगे बढ़ सकता है।

2 जो मृत्यु को सदैव ध्यान में रखता है, वह तेजी से सोचता है, तेजी से कार्य करता है, फलतः लक्ष्य की और तेजी से अग्रसर होता है व शीघ्र मन्जिल को पाता है।

3 मन को कामादि विकार न आने देने का एक उपाय यह भी है कि स्वयं को हमेशा उतम कार्यो में व्यस्त रखना, महान लक्ष्य बनाकर उस की पूर्ति के लिये प्रयत्नशील रहना।

4 जीवन की सफलता के लिये अति सावधान होकर चलना पड़ताा है, अर्थात मैं क्या देखूँ, क्या न देखूँ , क्या सुनू , क्या न सुनूँ , क्या कंरू, क्या न कंरूं ।

5 संसार में अनेक प्रकार की विचित्र घटनायें घटती ही रहती हैं, पर योगाभ्यासी यह देखता ही रहता है कि उनका उस पर क्या प्रभाव ही रहा है। जो उसे लक्ष्य से दूर करें उन को मन से दूर कर देता है।

6 संसार का उपकार किये बिना, कोई योगी नहीं बन सकता। ज्ञान को उन तक पहुंचाना जो ज्ञान के बिना भटक रहे हैं, सब से बड़ा उपकार है।

7 जो उतरदायित्व को बहुत अच्छी तरह निभाता है, श्रद्धा से कार्यो को करता है व लौकिक दृश्टि से तो उनन्ती प्राप्त करता ही है पर साथ मे योग में भी अच्छी प्रगति करता है।

8 योगाभ्यास करते हुये जो लाभ हुए, उन पर भी विचार करते रहें। यह क्रिया निराशा के क्षणों में आशा का संचार करती है।

9 किसी गुण को प्राप्त करने व किसी दोश को छोड़ने में चाहे कितनी ही बार व्यक्ति असफल हो, किंतु गुण को प्राप्त करने व दोश को छोड़ने का पुरशार्थ करता रहे व निराश कभी न हो।

10 अच्छे व बुरे कर्मो के पीछे हमारा ज्ञान व संस्कार काम करते हैं, कर्मो को प्रवृत करने वाला ज्ञान है। ज्ञान में त्रुटि आते ही कर्म व उपासना में त्रुटी आ जायेगी। इसलिये व्यक्ति के लिये सत्संग बहुत आवश्यक है। सत्संग के साधन है अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय, अच्छे व्यक्तियों की संगती व उनकी बातों को सुनना व मनन करना ईश्वर भक्ति——जिसका सीधा अर्थ है ईयवरीय गुणों को धारण करना।

11 वैराग्य प्राप्त न होने का कारण है ज्ञान में त्रुटि होना । ज्ञान में त्रुटि होने से प्रगति रूक जायेगी, बुद्धि विकसित नहीं होगी।

12 सोच में nk"k होने से, व्यक्ति लाख चाह कर भी सुख से जी नहीं सकता।

13 दुनिया क्या सोचती यह देखें या ईश्वर क्या सोचेगा यह देखें? संसार के सही मानने से लाभ भी क्या, यदि ईश्वर की दृ"ट में वह कार्य गल्त हो। जो ईश्वर की दृ"ट में बुरा है, वह बुरा है, जो अच्छा है, वह अच्छा है। अच्छें बुरे की कसोटी ईश्वर है न की समाज।

14 किसी व्यक्ति के कुछ गुणों को देखकर उनके दो"ाों को भी गुण नहीं मान लेना चाहिये तथा किसी व्यक्ति के कुछ दो"ा देखकर उनके गुणों को भी दो"ा नहीं मान लेना चाहिये। जो गुण— दो"ाों का पृथक विवेचन नहीं करता, वह विफल हो जाता हैं।

15 दूसरे से अपेक्षा करने से पूर्व उसके सामर्थ्य व साधन भी देखने चाहिये।

16 बिना प्रमाण के किसी व्यक्ति के वि"ाय में गल्त धारणा बनाना पाप है। जब तक प्रमाणो से सिद्ध न हो, तब तक न माने। बिना प्रमाण के मान लेने से उस व्यक्ति के प्रति द्वे"ा, उपहास व हीनता आदि की भावना उत्नन्न हो सकती है जो कि हमारी अध्यात्मिक प्रगति में बाधा खड़ी कप देगी।

17 झूठे आरोप लगने पर उसका प्रतिकार इसलिये आवश्यक है क्योकिं प्रतिकार न करने पर असत्य को बढ़ावा मिलेगा।

18 शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म, शुद्ध उपासना से ही व्यक्ति योगी बन सकता है, ईश्वर से साक्षात्कार कर सकता है, अन्यथा नहीं।

19 संसारिक भोग तो करोड़ो व्यक्तियों को प्राप्त हैं, पर ब्रहम विद्या तो किसी किसी को ही मिलती है।

20 अच्छे मार्ग की और परिश्रम करने वाला ही बुरे मार्ग से बच सकता है, अन्य नहीं। अच्छे मार्ग का परिश्रम ढीला होने पर व्यक्ति बुरे मार्ग की और जा सकता है।

21 अगर हम अच्छे काम करेगे तो हमारे अवगुण भी दबे रहेंगे। अच्छे काम छोड़ते ही हमारे अवगुण खुलकर नज़र आने लगेगें।

22 ईश्वर सभी का पालनहार है वह सभी की सहायता करता है चाहे कोई उसकी भक्ति करे या न करे, परन्तु यदि हम उस ईश्वर में विश्वास रखते हुये उसकी उपासना—स्तुति करते रहे तो हमें आत्मिक बल, मानसिक बल, तेज व उत्साह मिलेगा।

23 हर एक व्यक्ति में स्वयं की आपार शक्ति है। उस शक्ति को स्वाध्याय, अच्छे गुरू की संगती व अच्छे विद्वानों के

उपदेश द्वारा बढ़ाया जा सकता है। पर साथ यह भी आवश्यक है कि जो भी हम देखते, सुनते व पढ़ते हैं उसे तर्क द्वारा माप तोल कर देखें।

24 जैसे हम दुख से निकलने का जी जोर प्रयत्न करते हैं वैसे ही कुसंस्कारों के साथ युध छेड़ने पर हम उन से भी छूट सकते हैं

25 आंतरिक दो"k ध्यान में जाने पर ही उभर कर आते हैं और तप द्वारा उन्हे दूर किया जा सकता है। इसलिये ध्यान और तप अच्छा जीवन बनसने के लिये बहुत आवश्यक है।

यह प्रेरक वाक्य स्वामी सत्यपति परिव्राजक के प्रवचनों से लिये गये हैं

*****

miyC/kh dks dSls ns[ksa

gekjh gj miyC/kh ds ihNs fdlh u fdlh dk lkFk gksrk gSA eka& cki dk R;kx gksrk gS] cM+ksa dk vk'khokZn gksrk gSA fQj ml mifyC/k ds vdsys gdnkj ge dgka gq,\ ;g rks feyk tqyk l?k"k gS] fQj ge fdl ckr dk vfHkeku djrs gSa\ ;s lc rks ,d mRlo tSlk gh gS ftls fey tqy dj glha [kq'kh euk;k tkuk pkfg;sA
oSfnd FkkWVl if=dk ds lkFk tqM+dj gesa izLkUrk gS

eFkjk nkl izse pUn ialkjh

dj;kuk o ilkjha ds lkeku dh ,d iqjkuh o fo'oluh; nqdku

700 Main Bazar, Kalaka

01733-223284, 9896420563

*****

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH, GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL

& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh

Tel.: 0172-2708497

ईश्वर स्तुति

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

ईश्वर की स्तुति क्यों और कैसे की जाए तथा ईश्वर स्तुति के क्या लाभ हैं यदि इस बात को हम जानकर मान लेंगे तो निश्चित रूप से सही ढ़ंग से ईश्वर की स्तुति कर पायेंगे और उसका वांछित लाभ भी हमें होगा । आजकल प्रशंसा को ही स्तुति का पर्यायवाची मान लिया गया है । हमें कभी किसी से सहायता मांगनी होती है तो हम उसकी झूठी सच्ची तारीपफ यह सोचकर करना शुरू कर देते हैं कि सामने वाला व्यक्ति अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न हो जाएगा और हमारी सहायता करेगा । अक्सर ऐसा होता भी है हम अपनी झूठी प्रशंसा सुनकर पफूले नहीं समाते और प्रशंसा करने वाले को अपना मित्रा या अनुगामी जानकर उसकी सहायता करने को तत्पर हो जाते हैं । परंतु हम यह भूल जाते हैं कि झूठी सच्ची प्रशंसा करने वाला व्यक्ति अपनी स्वार्थ सिद्िध हेतु ऐसा कर रहा है ।

क्या परमपिता परमेश्वर मनुष्यों द्वारा अपना स्तुतिगान करवाना चाहते हैं क्या ईश्वर स्तुति करने से प्रसन्न होते हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर खोजने से पूर्व हमें स्तुति के सही अर्थ को समझना होगा । देव दयानन्द ने स्तुति को परिभाषित करते हुए लिखा है **''जो ईश्वर या किसी दूसरे पदार्थ के गुण ज्ञान कथन श्रवण और यथारूप सत्य भाषण करना है वह स्तुति कहलाती है''** इस व्यापक परिभाषा को जानने के उपरांत हम आसानी से समझ सकते हैं कि किसी की झूठी व अन्यथा प्रशंसा करना उसकी स्तुति नहीं कहलाती अपितु निन्दा की श्रेणी में आती है । यदि हम अपनी स्वार्थसिद्िध हेतु किसी दुराचारी, कामी, क्रोधि, लोभी व्यक्ति की प्रशंसा उसमें गुण बताकर करते हैं तो यह मिथ्याभाषण अथवा उसकी निंदा करना हुआ । ठीक इसी प्रकार यदि हम किसी की आलोचना करने के उद्देश्य से उसके गुणों के स्थान पर उस पर दोषारोपण करते हैं तो वह भी निंदा कहलाती है । गुणों के स्थान पर दोषारोपण या दोषों में गुणों का बखान निंदा की श्रेणी में आता है । यदि हम किसी वस्तु के गुण कर्म स्वभाव का यथारूप वर्णन व उस बारे सत्यभाषण करते हैं तो वह उसकी स्तुति कहलाती है अर्थात डाकू को डाकू कहना, ज्ञानी को ज्ञानी बतलाना स्तुति की श्रेणी में आता है ।

अब प्रश्न उठता है कि हम ईश्वर की स्तुति किस प्रकार कर सकते हैं ? ईश्वर की स्तुति करने से पूर्व ईश्वर के सच्चे स्वरूप का ज्ञान होना तथा उस सच्चे स्वरूप को जानना व मानना अत्यन्त आवश्यक है । परमपिता परमेश्वर सर्वव्यापी हैं, ईश्वर के सर्वव्यापी होने का प्रमाण ईश्वर द्वारा समस्त सृष्टि का निर्माण, पालन, न्याय व संहार से सिद्ध हो जाता है । ईश्वर सृष्टि का पालन कर रहे हैं ऐसा वह तभी कर सकते हैं जब कर्ता होने के कारण सृष्टि के कण–कण में स्वयं विद्यमान है । ईश्वर न्यायकर्ता है न्याय करने के लिए प्रत्येक प्राणी के प्रत्येक कर्म का दृष्टा रूप में ज्ञान होना आवश्यक है और चूंकि अनादि अनन्त ईश्वर सृष्टि के अन्दर बाहर सर्वत्रा विद्यमान हैं इसीलिए प्रत्येक प्राणी के प्रत्येक कार्य को पूरा यथावत ज्ञान परमपिता परमेश्वर को है । यदि ऐसे सर्वव्यापी परमेश्वर को हम किसी स्थान विशेष में या किसी जड़ मूर्ति में सीमित मान लें और उसी जड़ पदार्थ की पूजा अर्चना प्रारम्भ कर दें तो यह मिथ्या होने के कारण सर्वव्यापी ईश्वर की निंदा करना हुआ । परमपिता परमेश्वर सर्वशक्तिमान हैं लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि हम अकर्मण्य होकर बिना पुरूषार्थ किए ईश्वर की स्तुति प्रार्थना करके अपने कार्यों के लिए भी ईश्वर को ही उत्तरदायी मानने लगें तो यह भी मिथ्या होने के कारण सर्वशक्तिमान प्रभु की निंदा करना हुआ । यहां ईश्वर के सर्वशक्तिमान होने का अभिप्राय यह है कि परमपिता परमेश्वर को अपने कार्यो सृष्टि के निर्माण, पालन, न्याय तथा संहार करने के लिए किसी साध्न व सहायता की आवश्यकता नहीं होती । मनुष्य मननशील विचारशील प्राणी होने के कारण ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानकर उसके गुण कर्म स्वभाव का वर्णन करते हुए ईश्वर की स्तुति कर सकता है।

परन्तु फिर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि हम ईश्वर की स्तुति क्यों करें ? क्या ईश्वर हमारी स्तुति का भूखा है ? ईश्वर की स्तुति करना मनुष्य मात्रा का कर्तव्य है । प्यासे व्यक्ति को यदि कोई एक लोटा शीतल जल पिला दे तो अनायास ही उसके मुख से उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन के व धन्यवाद के शब्द निकलते हैं । यदि भूखे व्यक्ति को कोई भोजन देकर तृप्त कर दे तो वह भी देने वाले को आशीष देते हुए धन्यवाद करता है । तो क्या प्राणी मात्रा के उपयोग उपभोग के लिए निःस्वार्थ भाव से परमपिता परमेश्वर द्वारा प्रदत्त समस्त प्रकृति के धन ऐश्वर्यो का उपयोग या दोहन करते समय उस ईश्वर महान के प्रति स्तुति करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित करना हम मनुष्यों का दायित्व नहीं बनता । यदि हम ऐसा नहीं करते तो निश्चित रूप से कृतघ्नता दोष के भागी बनते हैं । लेकिन प्रश्न अभी भी आध अनुत्तरित है

। ईश्वर न्यायकारी होने के कारण हमारे स्तुति करने मात्रा से पक्षपाती होकर अपनी न्याय व्यवस्था को भंग तो नहीं करेगा ?

मनुष्य ईश्वर की सच्ची स्तुति तभी कर सकता है जब वह ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव सत्यस्वरूप का यशोगान करते हुए उन गुणों को न्यूनाधिक रूप में अपने जीवन में समाहित करने का प्रयास करे । ईश्वर की स्तुति करते समय यदि हमने ईश्वर को सृष्टि का निर्माता पालनकर्ता न्यायकारी दयालु बतलाया तो क्या कभी उस शाब्दिक स्तुति के उपरांत उसे कार्यरूप देते हुए कुछ सार्थक निर्माण किया या किसी निर्बल धर्मात्मा को संरक्षण देकर उसका पालन किया या दीन दुखियों पर अपनी दयालुता दिखाई या जीवन में सही न्याय किया । यदि हम ऐसा कर पाये तभी हमने ईश्वर की स्तुति की अन्यथा हमारी स्तुति या सारे दिन बजने वाले टेपरिकार्ड में कोई अन्तर नहीं है । टेपरिकार्ड में भी पूरा दिन गायत्री मंत्रा बजता है परन्तु उस गायत्री पुनश्चरण का लाभ उस जड़ पदार्थ को कभी नहीं मिलता । ठीक उसी प्रकार यदि मनुष्य बिना ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव को अपने जीवन में धारण किए केवल कण्ठ से उच्चारण करे तो उसका कोई लाभ मिलने वाला नहीं है और यदि इन गुण कर्म स्वभाव को अपने जीवन में धरण करने का प्रयास करते हुए हम ईश्वर की स्तुति करते हैं तो इसके बहुत से लाभ हमें जल्द ही अनुभव होने लगते हैं ।

स्तुति के लाभ में ईश्वरीय गुणों का बारम्बार बखान करने से स्तोता में अर्थात स्तुति करने वाले की आत्मा में आद्रता अर्थात आत्मा में विराजमान परमात्मा की प्रेरणा सुनने मानने की इच्छा उत्पन्न होती है । दूसरों के गुणों का बखान करने से अपने मन से अहंकार की भावना समाप्त हो जाती है । अहंकार के नाश के साथ कई गुणों का जीवन में समावेश और विकास होता है जिसमें नम्रता, धैर्य आदि प्रमुख हैं । आत्मा की आद्रता, अहंकार के नाश के साथ ही स्तुति करने से मनुष्य के मन में उन गुणों की ग्राह्यता बढती है और उन समान गुणों के ग्रहण करने से ईश्वर के प्रति अत्यंत प्रीति का भाव भी जागृत होता है ।

स्तुति को दो भागों में विभाजित किया गया है –

1. सगुण स्तुति : ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव का यथारूप वर्णन सत्यभाषण और उन्हीं गुणों का अपने जीवन में समावेश करने का प्रयास करते हुए ईश्वर के प्रति प्रीति का बढ़ना सगुण स्तुति कहलाता है ।
2. निर्गुण स्तुति : परमपिता परमेश्वर शब्द, स्पर्श, रंग, रूप, गंध, आकार आदि से रहित है । ऐसा मानना ईश्वर की निर्गुण स्तुति करना कहलाता है और इसके विपरीत यदि हम ईश्वर को किसी आकार, शब्द, स्पर्श, रंग, रूप या गंध से युक्त अर्थात साकार मानें तो यह ईश्वर की निंदा कहलाती है ।

संत

गैरूया शवेत चौला डाल, पूर्ण बने न संत ।
आचरण को जेकर स्वर्ण करे, तब बने संजीवनी संत।
करे आडम्बर अगर संत, पाखण्ड को कहे मिश्री खण्ड,
कभी तो समाज देता है दण्ड, कारण है नवीन शिक्षा का ढंग।
न सर्प बने, न कुबेर बने, संत तो सदा कवी कबीर बने।
अगर संत रंग देखे, अंग देखे, क्रीड़ा करे या क्रिया करे।
मखमली आसनों पर संग करे, फिर तो स्वयं का क्रिया-कर्म करे।
किसी को न पीड़ित करे, संत सदा पीड़ हरे।
मार कुण्डली अगर बैठे, कुण्डली पर संत नहीं वो कपट करे।
संत न बने प्रकोप, किसी खौफ का।
संत तो सदा सूरत करे, सदा सभी को सूरत दे।
कुछ संतो के चलन बन गए हैं प्रश्न,
उस गम से लोग पिस रहे हैं, गुस्से से वह तप रहे हैं।
तरकष रिक्त पड़ा है, वाणी ही बाण बचा है,
बिन्ध दो इसी से, निर्माणित कुटिया उत्पीड़न की, फिर न बने कारागार किसी की।
असली संत अंरिक्ता को शुद्ध करे, किसी को न विरूद्ध करे,
न ही कभी क्रुध हो, न ही किसी को निरूध करे।
संत होकर कु-पुरूष बने, फिर तो कहे कुफुर रहे।
असली संत मस्तिष्क को बुध करे, सोच को स्वर्ग करे।
आचरण को स्वर्ण करे, क्रोध को रद्द करे।
अभद्रता पर व्यंग्य करे, दुश्मनों को दंग करे।
युवकों को विवेकानंद करे।
सत्य का मंथन करे , मारूस्थल को मेघ करे।
मठ का बहिष्कार करे, पनघट का अविष्कार करे।
क्षमा का निर्माण करे, कल्याण का किला रचे।
दैवालय बनाये दिव्यता के, दूषित न करे देव भूमि कोए न स्वांग रचाये द्रोपदी का,
फसले न बीजे बुराईयों की, संरक्षण करे वैदिकता का।
करतब न दिखाये कामुकता के, द्रव्य-कामुकता अग्नि है, प्रहार करे परमाणु सा,
संत तो रक्षक बने भक्षक नहीं।

अशोक कुमार, उप–आबकारी और कर कमीशनर, (सेवा निवृत),
पंजाब, मो. 98789–22336

vkRek o vkRe guu

Mk- eg'k ikjokfy

gekjk eu fdl i dkj fn'kk ykrk g] ;g vkReguu dk le>u d fy;s vko';d gA tc Hkh gekjs eu e dkbZ fopkj vkrk g ;k fQj bPNk tkxrh g] vkRek gekjh cf) dk ln'k Hkstrh gA cf) 0;fDr d food d vuqlkj eu dk fn'kk nrh g vkj eu Kkufn;ka dk dk;Z e ykrk gA

vxj ge /;ku ls n[k rk eu dk fn'kk nus e vkRek o food dk cgr cMk ;kxnku gA vo i'u mBrk g D;k lc 0;fDr;k dh vkRek o food ,d Lrj dk g\ bl dk tokc g&&& fcydy ugha

_f"k eu u dgk g] ty 'kjhj dk lkQ djrk g] lR; eu dk ifo= djrk g] fo|k o ri vkRek dk 'kq) djr g o Kku ls cf) dh 'kf) gkrh gA bl ls ,d ckr Li"V g fd 0;fDr us viuh vkRek dk fdruk 'kq) fd;k g og bl ckr ij fuHkj djrk g fd D;k mlu lgh Kku ikIr djd ri fd;k gA vFkkr vdyk Kku gh dkQh ugha ri ml ls Hkh vko';d gA lok] ijkidkj] nku] n;k] ;K] ri] R;kx ,dkUrokl vkRek dk mUur dju e lgk;d gkr gA vxj fo|k o ri }kjk vkRek dk 'k} fd;k gvk g rk vkRek tk ln'k cf) dk nxh og mre ekxZ dh vkj ls tku okyk gkxkA

vc ge food d dk;Z dk le>r gA food dk lh/kk vFk g Bhd o ;FkkFk KkuA okLro e food ogh dke djrk g tk fd gl i{kh djrk gA gl i{kh d lkeu ;fn ty feyk n/k j[k fn;k tk, tk og n/k rk ih yrk g ij ty dk NksM nrk gA ;kuh n/k dk n/k o ikuh dk ikuh dj nrk gA food dh eu"; Hkh bl h rjg Bhd D;k g ml dk le>u dh 'kfDr j[krk gA mnkgj.k d fy;s vxj fdlh food dh eu"; ls dgk tk;s fd x.k'k dh ifrek n/k ih jgh g rk og fcuk dN nj yxk;s ;g dg nxk fd ;g lEHko ugha D;kfd og food }kjk tkurk g fd dkbZ Hkh futho oLrq og fd;k ugha dj ldrh tk fd lth o oLrq dju d l{ke gA food dh eu"; dHkh fdlh rjg dh HkkfUr e ugha jgrk] dHkh MkokMky ugha gkrkA ml dh fLFkrh xqQk d Hkhrj j[k ml nhid d lkeku gkrh g ftl dh Tokyk fLFkj jgrh g ckgj pkg fdru Hkh vkU?kh rQku pyA vFkkr vxj ckgj yk[kk ykx x.k'k dh ifrek dk n/k fiyk jg g rk

Hkh og viu fo'okl ls Mxexk;xk ugha ge ;g Hkh dg ldr g fd food og 'kfDr g tk vPN cj e Qd n[ku dh lkp inku djrh gA capacity to discriminate between good and bad

bl rjg ge dg ldr g vxj eu"; e Kku] ri vkj food g] rk mlds eu dk tk ln'k feyxk og lgh gkxkA

egf"k n;kuUn ljLorh u viu vej xUFk lR;kFk idk'k d lkros leYykl e fy[kk g fd Kku vkj ri ls gekjh vkRek lR; o vlR;] Bhd vkj xyr dk le>u d l{ke gks tkrh gA J"B ekxZ ij pyu okyk dk ijekRek Hkh lko/kku dj nrk gA tc 0;fDr dkbZ n"de dju pyrk g rk mldh vkRek vkj food mldk lko/kku djr g;s dgr g&&&r ;g er dj vkj mldk dju e mldk Hk;] yTtk vkj 'kdk mRiu gkrh gA ;gk ij nk idkj dk reaction n[ku e vkrk gA tk 0;fDr Hkxoku dk ekudj mlds lfu/; e jgrk g mls b'ojh; x.k xyr jkLr ij tku ls jkd yr g vkj ;fn og xyrh dj Hkh y rk n;kyq ijekRek dh d ik ls mls ,d ne xyrh dk ck/k gks tkrk g vkj og viu dne ckfil [khp yrk gA lkFk gh og vkxs dHkh ,slh xyrh u dju dh 'kiFk yrk gA nljs o 0;fDr gkr g tk u rk Hkxoku d Bhd Lo:lk dk le> gkr g vkj u gh b'oj ij mudk i.k fo'okl gh gkrk gA o ykHk vkj LokFk ls o'khHkr gk dj viuh vkRek dh vkokt dk Bdjk nr g vkj ml n"de dju e ior gk tkr gA nk pkj ckj mudh vkRek mudk jkdrh g ij tc eu"; dke]dk)] ykHk] ekg vkj vgdkj ls o'khHkr gkrk g rk vkRek dh vkokt nc tkrh g vkj og n"de dju dk vknh gk tkrk gA

bl vkRe guu dgk x;k gA ,d ckj tc 0;fDr n"de dju dk vknh gk tkrk g rk mls vkRek dh vkokt lquuh cUn gk tkrh gA

gekj lekt e vijk/kh nk rjg d gA ,d og tk ,d ckj vkRek dh vkokt dk vulquk dj xyrh dj cBr g] mug viu fd; ij i'pkrki gkrk gA nljs o ftUgku viuh vkRek dk guu dj fn;k

gkrk gSA mUgs vijk/k djus ds ckn dkbZ Ik'pkrki ugha gkrk vkSj ,d ds ckn nwljk vijk/k djrs gS o bl rjg dbZ [kRe ugha gkrkA blfy;s ;g t:jh gS fd ge viuh vkRek dk guu u djsA ;g rHkh lEHko gS tc ge bZ'oj ds lfu/; esa jg dj bZ'ojh; xq.kksa dks /kkj.k djrs jgsA

eu"; ksa dks rhu Js.kh esa ckaVk x;k gS

igyh Js.kh esa os gSa tks vkRek dh vkokt dks fdlh Hkh gkyr esa vulquk ugha djrsA ftl dke ds fy;s vkRek gka djrh gS mls gh djrs gSA vkRek ijekRek esa jr jgrh gSA ,sls 0;fDr mPpre Js.kh esa vkrs gSA

nwljh Js.kh esa os gSa tks eu dh rks djrs gS ij vkRek dh Hkh lqurs gSA vkRe fpUru vkSj vkRe fujh{k.k djrs jgrs gSA

rhljh Js.kh esa os gSa vkRek dh vkokt dks ugha lqurs gS vkSj vkRe guu djrs jgrs gSA ,sls 0;fDr fud"B o v/ke Js.kh ds dgyk;s tkrs gSA tks Hkh lekt esa v/keZ vkSj cqjkbZ;ka gS] bUgh 0;fDr ;ksa ds dkj.k gSA

ges ;g ;kn j[kuk pkfg;s fd bZ'oj lc dh vkRek esa cSBk gS vkSj iR;sd dk;Z ls igys lc dks lR;kin'k dj jgk gSA tks 0;fDr mlds ladsr dks le> ysrk gS vkSj mls d vuq:Ik pyrk gS ;g cgqr lh ck/kkvksa ls cp tkrk gSA doy ek= bZ'oj dks ekuus ls iz;kstu fl/k ugha gkrk cfYd egRo ;g l[krk gS fd ge bl dk fdruk ykHk ls jgs gSA

*****

क्या मान लें लोगों ने कुछ सबक सीखा है ?

हाल में प्रकाशित आंकड़ो के अनुसार हिमाचल में स्थित मन्दिरों में साल 2013 में रू 83 करोड़ की चढ़त आई जव कि 2012 में यह 87 करोड़ थी। इस से पहले हर साल 20% की बड़ोतरी होती थी । क्या मान लें लोगों ने सबक सीखा है कि ईश्वर हमारे अन्दर ही विराजमान है, उसे पाने के लिये खास स्थानों पर जाने की आवश्यकता नहीं। आप ध्यान द्वारा निराकार और अजन्मा ईश्वर के साथ घर बैठे ही मिलाप कर सकते हैं। यही आर्य समाज का संदेश है। हवन कर लिया या तोते की तरह मन्त्र बोल दिये आर्य समाज नहीं हैं।

*****

An inspirational personality

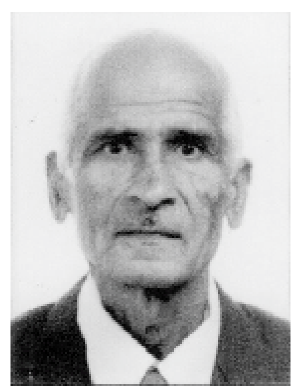

Today, when man's stress is on longevity and healthy life, Mr Madan Lal Chitkara, who is in late seventies, can be an inspiration to many with his spectacular achievements in the field of athletics.

A Chandigarh resident and a devout Arya Samajist, Mr Chitkara won three Gold medals in Masters Athletic Championship which was held in Coimbatore, from 24th to 27th February 2014. The events in which he won Gold Medals are (1) 5 Km Race Walk (2) 5 Km run (3) 1.5 Km run

Now he is selected to represent India in Asian Masters Athletic Championship to be held in Japan in August 2014

Shri Chitkara retired from Air Force as Honorary Flying officer in 1993. Vedic Thoughts wishes Mr. Chitkara many- many years of active and eventful life and request him to share with us what has really contributed to his being so healthy and full of life even at this age. **Vedic Thoughts** is all about sharing such inspirational thoughts.

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059

शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली

आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Ekgf"kZ n;kuUn ckyvkJe dh LFkkiuk Qjojh 2013 esa p.MhxM+ ds lkFk yxs 'kgj ekgkyh esa dh xbZ FkhA iwHkq dh vlhe d`ik o vki lc ds lg;ksx ls vkt bl esa 10 cPps o nks okMZu gSA bldk fujUrj fodkl gekjk mís'; gSA

महर्षि दयानन्द सन्यास आश्रम
(Old Age Home)

वृद्ध माताओं को, जिनका कोई सहारा नहीं है, उनके लिए महर्षि दयानन्द बालआश्रम में रहने/ खाने/ व अन्य सुविधा देने की व्यवस्था की जा रही है जो वृद्ध माताएं बाल आश्रम में रहने की ईच्छुक हों वो कृप्या हमें सम्पर्क कर सकते हैं।

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

योगिंदर पाल कौड़ा, नरेन्द्र गुप्ता लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

fuek.k ds 60 o"k

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Mumbai-23095120,, 9892904519, 25412033, 25334055, Banglore-22875216, Hydrabad-24651472, 24751760, Kolkata-9339344231, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Indore-982633800, Gurgaon-2332988, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790, Yamunanagar-232063, Kanpur-2398775, Nainital-235489, Mukerian-245113, Ujjain-2562140, Porbander-9825275198, Ajmer-2431084, Kota 7597306851, Jhansi-244163 , Saharanpur-09412131021

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

ftu egkuHkkoks us cky vkJe ds fy, nku fn;k

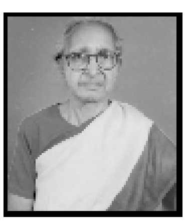

Mata Sh. Satyavati

Ram Lal Sewak

Harjinder Singh

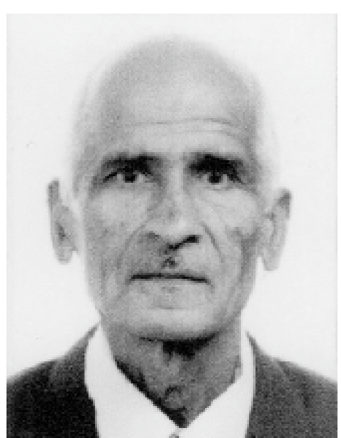

Sh. Madan Lal Chitkara

Bukul

JAI JAWAN JAI INSAN JAI KISAN

I am Future of Nation Please Save My Future

Your Success Our Goal
Your Career our Mission

Education is the Most Powerful Weapon which you ca use to change the world.
Serving in the field of Education
40 Years.

Lowest Monthly Fee

Prospectus available:
at the Institution Reception
between 8.30 a.m. to 3.00 p.m.

Result 100%

Registration/Admission Helpline : 9814411946, 9876516703

Salient Features :

- Beautiful Building in 1 acre of Land
- Highly Qualified, Trained, Experienced & Dedicated Staff
- Pollution free environmental trees & flowers
- Moral and Value based Coaching
- Good Play Grounds for Kho-Kho, Badminton, Basketball & Volleyball
- Comprehensive Rich Library
- Spacious, airy having sunlight Class Room
- Kindergarten **A.C. Rooms**
- School's own Buses
- Well equipped Math, Science, Computer & Home Science Labs
- Day Boarding Available Upto 5.30 p.m.
- Regular Medical Check-up

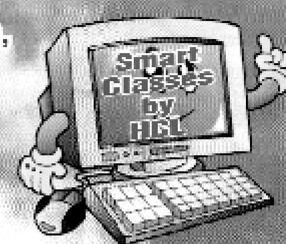

SHASTRI MODEL SR. SEC. SCHOOL

PHASE 1, MOHALI (AFFILIATED)

Every Strong building needs solid foundation

Unit of : National Institute of Open Schooling (Academic & Vocational)
Ministry of H.R.D., NEW DELHI
Punjab Open School (P.S.Ed.B.)

Mrs. R. Bala
M.A., M.Ed.
Principal

Dr. M.D. Sabharwal
Chairman

Mohinder Singh Saini
Secretary

Ram Lal Sewak
P.S.S. (Retd.)
Director/Manager

Ptd. at Aashirwad -9888234286

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870